प्रथम अध्याय

हरिशंकर परसाई : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

प्रथम अध्याय

हरिशंकर परसाई : व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

हरिशंकर परसाई ने अपनी रचनाशीलता में व्यंग्य विधा को माध्यम के रूपमें अपनाते हुवे अपना परिचय हिंदी जगत को दिया है। प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढानेवाले जो साहित्यकार स्वतंत्र भारत में साहित्य - रचना कर रहे हैं, उनमें परसाई प्रमुख हैं। परसाईजी ने सन १९४८ के आसपास लिखना शुरू किया, पर सन १९५०-५१ में वे जमकर लिखने लगे। इसीलिये तो उन्हें छठवें और सातवें दशक के प्रतिनिधि जनलेखक के रूपमें पहचाना जाता है। परसाई ने अपने व्यंग्य साहित्य के माध्यमसे सर्वसाधारण जनता को सामाजिक और राजनीतिक समझदारी देनेका और सड़ीगली जीवनव्यवस्था को नष्ट कर एक नयी समाजरचना की स्थापना का संकल्प दिया है।

प्रत्येक लेखक अपने अपने ढंगसे लिखता है। परसाई ने यह बात तो तय नहीं की थी कि, वे व्यंग्य ही लिखेंगे। पर कुछ मानसिक प्रवृत्ति, चेतना तथा सामाजिक जीवन के प्रति प्रतिबध्दता के कारण ही उन्होंने विसंगतियों, विकृतियों, अन्याय, शोषण, पाखंड, दोमुँहापन, ढोंग आदि को पकड़ा। एक रचनाकार के नाते अभिव्यक्ति के माध्यम के रूपमें उन्हें व्यंग्य ही अधिक अनुकूल महसूस हुआ। इसलिये उन्होंने व्यंग्यपूर्ण रचनाओंकी निर्मिती काफी सफलता के साथ की है।

हरिशंकर परसाई ने सामान्य जनको प्रगतिशील जीवन मूल्यों के प्रति सचेत करने का तथा समाज और राजनीतिमें घुले हुवे पाखंड को स्पष्ट करने का जो प्रयास किया, वह निश्चित रूपसे सराहनीय है। उनका व्यंग्य आधुनिक समाज, उसका जीवनदर्शन, धर्म तथा राजनीति, साहित्य

तथा संस्कृति आदि प्राय: सभी विषयोंपर तीखी चोट करता है। साथमें हमें कुछ सोचने को सामग्री भी देता है। व्यंग्य लेखक का मानव जीवन से गहरा संबंध होता है। इसीलिये तो वह बुराईयों की ओर संकेत कर के, लोगों को उनसे बचाने का प्रयत्न करता है। लोग व्यंग्य को कटु तथा अमानवीय कहते हैं, पर यह बात सच है कि, एक जिम्मेदार लेखक यदि गलत और घातक व्यवस्थाके प्रति व्यंग्यरूपी कटु अस्त्रका प्रयोग करता है, तो उसके पीछे उसकी पवित्र भावना ही होती है।

परसाई ने जिस व्यंग्य को अपनाया है, वह कथ्य नहीं, कथन की प्रकृति है। व्यंग्य साहित्य की विधा भी नहीं है। परसाई ने विधा के रूप में कहानी, उपन्यास, निबंध लिखे हैं, उनमें कथनकी प्रकृति व्यंग्य है। यह इतना धारदार, पैना, उत्तेजक है कि, रचना के ऊपर मँडराता है। उसकी मार इतनी प्रभावी होती है कि, वह एक ढाँचे के रूप में याद रह जाता है। इसी व्यंग्यके सहारे जहाँ वे पुराने, जड़ और रूढ़का मजाक उडाते हैं, वहीं अपने आस-पास की राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को भी दुर्लक्षित नहीं करते। शायद इसीकारण उनकी पकड़ गहरी और चोट अधिक तीखी होती है। उनकी आंतरिक वेदना, दु:ख, निराशा से उभरकर आनेवाला तीखा व्यंग्य यधपि हमें ऊपर से हँसाता है तो तुरंत कुछ सोचने को भी मजबूर करता है। परसाईजी ने व्यंग्य की विधा को सामयिक घटनाओं के साथ ढालकर नयी दिशा तथा नया सामर्थ्य और समृध्दि देने का प्रयास किया है।

परसाई ने अपने लेखन की शुरूआत शास्त्रीय सवालों से उलझाकर नहीं बल्कि जीवन के अहं प्रश्नों के बीच अपने आपको फेंककर, उनसे टकराकर अपने रचनात्मक व्यक्तित्व का सर्जन किया है। प्रश्नों और खुद के संस्कारों के संघर्ष में समस्याएँ सुलझी हैं। इससे एक फक्कड संघर्षजीवी,

चौकन्ना, दृढ और परिवर्तनकामी व्यक्ति परसाई के रूपमें रचा गया जो अपने युगकी परिस्थितियों के प्रति विशेष रूपसे सजग है। उसमें व्यक्ति और समाज के जीवन से सीधा और घनिष्ठ संपर्क कर के, उसके सारे अंतर्विरोध, असामंजस्य, विकृति और मिथ्याचार को व्यंग्य के द्वारा उद्घाटित करने की क्षमता है। इस विलक्षण क्षमता को पाते समय उन्होंने इतिहास के सबकसे कुछ चीजें जानी और कुछ अपने जमाने से जूझाते हुवे और कुछ दुनिया के उन जैसे लेखकों - कबीर, गोर्की, चेखव, प्रेमचंद, निराला, लोर्का, ब्रेख्त आदि से विरासत के रूप में प्राप्त की।

भाषाकी सहजता, कथन की वक्रता, मोहक शैली से युक्त उनका तिलमिला देनेवाला व्यंग्य वर्तमान जीवन के एक के बाद एक मुखौटे उतारता जाता है। जिसके कारण मिथ्याचार विकृतियाँ, पाखंड और अविचार अपने नग्न रूपमें हमारे सामने आ जाते हैं। परसाई एक ऐसे व्यक्ति है, जो भविष्य और सुखी मानव के लिये अपनी भी कुछ जिम्मेदारियाँ मानते है। इसीकारण एक सजग, जागरूक, तथा सचेत व्यंग्यकारके रूप में वे अपना परिचय देते हैं। केवल मजा लेने के लिये या मनोरंजन के उद्देश्य से वे व्यंग्य नहीं लिखते। बल्कि एक एक पंक्ति उद्देश्यपूर्ण तथा सार्थक होती है। इसलिये स्वयं लेखकने कहा -

` हँसना और हँसाना, विनोद करना अच्छी बातें होते हुवे भी मैंने केवल मनोरंजन के लिये नहीं लिखा। मेरी रचनाएँ पढकर हँसी आ जाना प्रासंगिक है - मेरा यथेष्ट नहीं। और चीजोंकी तरह मैं व्यंग्य को उपहास, मखौल न मानकर, एक गंभीर चीज मानता हूँ।` (१)

लेखक अपने आपको बेह्या मानते हैं, क्योंकि अपने बारेमें कहने में या अपने उपर हँसने में भी वे सकुचाते नहीं। अपनी तारीफ और बुराई करने में लेखक सक्षम है।

जीवन जैसा है, उसे बेहतर बनाने की कोशिश में लेखक लगा हुआ है। इसलिये तो वे गलत जीवनमूल्यों को देख-परखकर नष्ट करना चाहते हैं। मूल्योंमें जहाँ भी खोट है, उनमें सुधार लाना चाहते हैं। विसंगति अन्याय, मिथ्याचार, शोषण, पाखंड, दुमुँहापन आदि बुराइयों को हमने कैंसर की तरह पाल पोसकर बड़ा किया है, उनका अन्वेषण करना, उन्हें अर्थ देना तथा उनके कारण खोजना लेखक अपना कर्तव्य मानता है। परसाई ने एक लेखक के रूपमें जिस जीवनकी इच्छा रखी है, उसमें एक ऐसी विचारधारा जरूरी है, जिसमें जीवन का ठीक विश्लेषण हो सके और ठीक निष्कर्षोंपर पहुँचा जा सके। इसी धारणा के अनुसार लेखक का मार्क्सवाद में अत्यधिक विश्वास है।

परसाईजी के मतानुसार व्यंग्य एक `पाजिटिव` चीज है। उसे नकारात्मक रूपमें देखना ठीक नहीं लगता। समाज में यह बुरा है, असंगत है, अकल्याणकारी है,-यहीं `व्यंग्य` बतलाता है। व्यंग्य एक बेहतर मनुष्य, एक बेहतर समाज व्यवस्था के प्रति आस्था रखता है, इसलिए जो बुराई उसे दिखायी देती है, उसके प्रति वह संकेत करता है। अपनी बात के स्पष्टीकरण में लेखक ने खुद कहा है, `डॉक्टर अगर मरीजों को रोग बताता है, तो वह निराशावादी, नकारात्मक और `सिनिकल` नहीं है, वह आदमी को स्वस्थ करना चाहता है, इसलिये रोग बताता है। अगर वह रोगी से कह दे कि, वह स्वस्थ है तो वह मर जायेगा।`(२) ऐसा सकारात्मक लहजा लेखक को बिल्कुल पसंद नहीं है।

हरिशंकर परसाईजी को सामाजिक जागरूकता ने बेचैन किया है, साथ में वह प्रखर विवेक भी सौंपा है कि, व्यंग्य किसप्रकार और क्यों करना चाहिए। उन्होंने तमाम चीजों का मज़ाक उड़ाकर अपने आपको बेदाग साबित करने का कहीं भी प्रयत्न नहीं किया। एक शामिल आदमी के

अनुभवों की विविधता के साथ उतनी ही प्रखरतासे अपने आपको निर्मम व्यंग्य के हवाले किया है। इसीलिये तो निर्मल वर्मा ने उन्हें एक पैने व्यंग्य लेखक के रूपमें संबोधित किया है। वे एक `सेंसटिव` और पैने व्यंग्य लेखक हैं। उनकी हर रचना अचूक निशाना बेधती है। व्यंग्यकी कला को छिछले स्तर से उठाकर, गंभीर और जागरूक स्तरपर प्रतिष्ठित करने में बिल्कुल एकमेव है, अपने आपमें अद्वितीय है।

व्यक्तित्व :

हरिशंकर परसाई व्यक्ति और लेखक के रूपमें जितने विरल होंगे, उतने ही वे व्यक्तित्ववान कहलायेंगे। कुछ लेखक सामाजिक ऋण अस्वीकार करने से अद्वितीय माने गये है, तो परसाई जैसे लेखक सामाजिक ऋण स्वीकार करने में अद्वितीय है। उनके व्यक्तित्व के संदर्भ में यही देखना है कि, वे कौन से मानवीय कारण है, जिन्होंने उन्हें अद्वितीय बना दिया है।

परसाईजी का जन्म २२ अगस्त, १९२४ में होशंगाबाद जिलेके `जमानी` गाँव में एक श्रमजीवी परिवार में हुआ। उनके पिताजी झूमकलाल परसाई जंगल में कोयला बनाने तथा बेचने का काम करते थे। यह काम एक जगह नहीं चलता था, इसीकारण जहाँका काम समाप्त हो गया, उसे छोडकर दूसरी जगह जाना पडता था। इसप्रकार जमानी, रहटगाँव छोडते हुवे वे `टिमरनी` गाँवमें जा बसे। अपना घर तो था नहीं, किरायेके मकान में रहने लगे। परसाईजी के पिताजी काम के सिलसिले में जंगल में घूमते रहते, इसीकारण माता की देखरेख में ही उनकी परवरिश हुवी। जब परसाई तेरह-चौदह साल के थे, तो प्लेग की बीमारी में उनकी माँ की मृत्यु हो गयी और चार पाँच बच्चोंकी पूरी जिम्मेदारी

पिताजीपर आ पड़ी । बहुत कम पैसों में पूरी गृहस्थी चलानेवाली पत्नी का साथ न होने से पिताजी भीतर से टूट गये । परसाईजी की एक बुआ थी, जो बच्चों को स्नेह तथा ममता देती रही । सभी भाई-बहनों में बडे होने के कारण परसाईजी को ही जिंदगी से साक्षात्कार करना पडा । इसलिए उन्होंने हायस्कूल पास करने के बाद जंगल विभाग में नौकरी कर ली । बाद में अध्यापन किया और छोड़ा भी ।

आमतौरपर देखा जाता है कि, जो जितनी जल्दी जिंदगी से साक्षात्कार कर लेता है, वह उतनी ही जल्दी आजाद मनुष्य हो जाता है । परसाईजी के परिवार तथा परिवेश ने उन्हें बिल्कुल आजाद बना दिया था । साफ-साफ देखना, स्पष्ट कहना, सभी के साथ भाई - चारा निभाना, श्रम को ही सबसे बडी शक्ति मानना, किसी को न बड़ा, न छोटा समझना तथा भविष्यकी चिंता में घुट-घुटकर न मरना - ये आजाद मनुष्य की सारी विशेषताएँ परसाईजी में बराबर मौजूद थी ।

आजाद प्रवृत्ति के होने के कारण आजादी को छीननेवाली सरकार का या किसी संस्था का अधिकार अपने उपर आपके नहीं जमने दिया । शायद इसीकारण वे नौकरी के दायरे में आते-जाते रहें ।

समाज में पनपनेवाला दुमुँहापन तथा दुरंगी चालें उनसे सही नहीं गयीं । इसलिए वे इस दुमुँहेपनके मूलतक पहुँच गये तो उनकी समझ में आया कि, समाज में बदमाशी और धूर्तता के बीज बोनेवाला एक खास वर्ग होता है । परसाईजी को ऐसे अनुभव मिले, जिसके कारण उन्हें इस वर्ग को समझाने में काफी सरलता मिली ।

समाज में गरीब और अमीर दो अलग अलग वर्ग है । दोनों के हित, धर्म, कर्म, लक्ष्य और जीवन में सिध्दांत पूर्णत: अलग है । प्रभावी या श्रेष्ठ वर्ग की हमेशा यही कोशिश रहती है कि, वे दुर्बल वर्ग के

सिध्दांत तथा हितों को छीनकर अपने भीतर समेटे। हितसाधन तो इसी प्रभावी वर्ग का होता है, पर शारीरिक श्रम तो कनिष्ठ वर्ग को ही उठाने पडते हैं। आसपास नजर डालनेपर एक ऐसी व्यवस्था दिखायी देती है कि, गरीब अपना शरीर इस योग्य बनाकर रखे कि, वह श्रेष्ठ वर्ग के काम आये। इस विभाजन को परसाईजीने न केवल पहचाना, बल्कि मजदूरों तथा गरीब किसानों के साथ घुल-मिलकर उसके अनुभवों का अर्जन किया। इसी दौरान वे इस बात को भी जान गये कि, देश के सामंत और पूँजीपति एक साथ है। परसाईजीने हमेशा इसी संगठन के खिलाफ लिखने का प्रयास किया है और लिखा भी है। शायद इसी कारण उन्होंने सांप्रदायिक और जातीय शक्तियों के खिलाफ संघर्ष के औजार के रूपमें अपने व्यंग्य लेखन का उपयोग किया है।

परसाई एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक वर्गशक्ति के रूप में है और इस वर्गशक्ति की शिक्षा उन्होंने गोर्की की तरह जिंदगी से पायी है। जिंदगी उनके लिये सबसे बडा विश्वविद्यालय है। जिंदगी की नजदीकियोंने, वर्गबध्द जिंदगी की ताकत ने उनकी चेतना को फौलादी बना दिया।

कबीर और मुक्तिबोध रचनाकार के रूप में परसाई के दो गहरे साथी है। कबीर तो उनके व्यक्तित्व के रोम-रोम में महसूस होता है। कबीर की अक्खडताको उन्होंने इसतरह आत्मसात कर लिया है, जैसे निराला ने तुलसीदास को। 'मुझसे बुरा न कोय' कहकर रूढियों को तोडफोड डालने का प्रयत्न कबीर ने किया था। परसाई ने अपने साथ-साथ पूरे वर्ग का आत्मालोचन किया है। उनका आत्मसंघर्ष और आत्मव्यंग्य कबीर से भी एक कदम आगे दिखायी देता है।

वर्गों के बीच के विछिन्न अंतराल के कारण ही वर्ग शत्रुताका

अहसास होता है। इसी वर्ग-शत्रुता की पहचान परसाईजी अत्यंत बारीकी से करते हैं। हमेशा सजग रहना, चौकन्ना रहना तो उनकी खासियत है। इसीलिये जहाँ कही सामाजिक अनुपात बिगड़ा हुआ है, सामाजिक विसंगतियाँ उभरने लगी है, परसाई तुरंत ऐसी स्थिति को अपने व्यंग्याला से फटकार देते हैं, और समतोल साधनेका प्रयत्न करते हैं। जहाँपर परिवर्तन ही लक्ष्य है, वहाँपर अखबारी सीधेपन का इस्तेमाल न करके ` फॅन्टसी ` का सहारा लेते हैं।

परसाईकी सहानुभूति हमेशा जनता के साथ रही है। कारण उनके जीवनका धरातल यथार्थ से जुड़ा हुआ है। उन्होंने जीवन की किसी भी विडंबना से कोई भी समझौता नहीं किया है। जीवन में घटित किसी भी घटना या कारण से उनका चित्त बिल्कुल विचलित नहीं हुआ। साहसी बनकर वे लगातार परिस्थितियों से साक्षात्कार करते रहे और बड़े होने के नाते परिवार की जिम्मेदारी पूरी तरहसे निभाते रहे। परसाईजी ने अपने विशिष्ट व्यक्तित्व की रक्षा करने में कामयाबी हासिल कर ली। अपनी स्वतंत्र तथा निर्भीक प्रवृत्ति के कारण वे किसी भी नौकरी में अधिक समयतक टिके नहीं। जीवन में आयी कितनी ही कष्टदायक और गंभीर कठिनाईयों का सामना करते करते ही वे लेखन की ओर मुड़े यह बात बिल्कुल सच है। इस संदर्भमें खुद उन्होंने कहा है -

` मैंने लेखन को दुनिया से लड़ने के लिये एक हथियार के रूप में अपनाया होगा। दूसरे इसी में मैंने अपने व्यक्तित्व की रक्षाका रास्ता देखा। तीसरे, अपने को अवशिष्ट होने से बचाने के लिये मैंने लिखना शुरू कर दिया। `[३]

लेखक जब व्यक्तिगत दु:ख के दायरे से बाहर निकला, तो उसे महसूस हुआ कि, मेरे सिवा और भी कितने ही लोग दु:खी है, अन्याय से पीड़ित और शोषित है। ऐसे लोगों के लिये लड़ना है, तो केवल रोने -

घोने से काम नहीं चलेगा । हाथ में कलम लो ही थी, उसीको हथियार बनाया और सही ढंग से इतिहास, समाज, राजनीति और संस्कृतिका अध्ययन कर के गंभीरता से व्यंग्य लिखना शुरू किया । यहीं कहीं एक व्यंग्य लेखकका जन्म हुआ । जीवन - जगत की परिस्थितियों ने परसाईजी को एक गंभीर व्यंग्य लेखक बना दिया ऐसा कहना गलत नहीं होगा ।

परसाईजी के व्यक्तित्व के विकास में उनके आसपास का परिवेश विशेष रूपसे सहायक रहा है । इसी परिवेश से प्राप्त बीजों के आधारपर उन्होंने कितनी ही सशक्त रचनाओं की निर्मिति की है । जीवन की कितनी ही घटनाओं को परसाई ने कथानक का रूप दिया है । जीवन से प्राप्त कटु अनुभवों ने व्यक्तित्व को गढ़ा और इस प्रक्रिया में जो अनुभूति मिली, उसने उसके भीतर के रचनाकार को व्यंग्य लिखने की प्रेरणा दी । समाज, जीवन तथा मनुष्यता के उदात्त मूल्यों से जबकोई विरूपता जुड जाती है, तो परसाई विशेष रूपसे प्रखर और आक्रामक हो उठते है । आक्रामकता के इस सिलसिले में व्यंग्य कई शकलों में सामने आता है ।

व्यक्ति को केवल मानवीय अस्तित्व मिलता है । उसे अपना व्यक्तित्व खुद बनाना पड़ता है । जीवन के यथार्थ से बारबार होनेवाली टकराहट से मानवी अस्तित्व को एक विशेष रूप मिलता है । इस विशेष रूपको प्रतिमाशाली और चेतना संपन्न व्यक्ति अपनी प्रतिभा और विचार, अध्ययन और आत्मसंघर्ष की प्रक्रिया से एक विशिष्ट व्यक्तित्व में बदलता है । मानवीय अस्तित्व को व्यक्तित्व में बदलने का कार्य जीवन के अलग अलग क्षेत्रों में होता है । इस दृष्टि से देखा जाये तो हरिशंकर परसाई का साहित्य उनके व्यक्तित्व निर्माण में बहुत अधिक महत्व रखता है ।

अभिव्यक्ति की एक विशेष प्रतिभा परसाईजी ने पायी है, जिसने उन्हें एक असाधारण लेखक का रूप प्रदान किया । उन्होंने अपने आपको समाज से अलग नहीं माना, बल्कि अपने लेखन के माध्यम से अपने आपको एक सामाजिक मनुष्य के रूपमें समाज के सामने रखा । समाज के संघर्ष से प्राप्त अनुभव और अनुभव के विश्लेषण से प्राप्त दृष्टि ने तथा आत्मसंघर्ष ने परसाईजी को लेखक बना दिया । निजी प्रेरणा से सामाजिक प्रयोजन तक कितनी ही स्थितियाँ व्यंग्य लेखक के उद्देश्य के रूप में आ सकती है । उसमें आलोचनात्मक दृष्टिका होना नितांत जरूरी होता है । हरिशंकर परसाई एक ऐसे व्यंग्य लेखक है, जिनमें एक सार्थक आलोचनात्मक दृष्टि है । परसाई का लेखन पाठक को विचलित करता है और साथ ही जिम्मेदारियों का एहसास दिलाते हुए सोचनेपर मजबूर करता है । उनमें विसंगत स्थितियों के बदलाव की तीव्र इच्छा है, जो गहरी सामाजिकता से संलग्न है और आज के यथार्थ के अंतर्विरोधों,जटिल संक्रमणों की अंतर्भेदी पहचान है ।

परसाईजी के व्यक्तित्व के साथ साथ उनके बारेमें निम्नलिखित जानकारी हासिल करना भी जरूरी है ।

परसाई मध्यवर्गीय परिवार के एक सदस्य है । दोभाई, तीन बहनोंका परिवार । परिवार में बहन, भानजे और भानजी । परसाई खुद अविवाहित है ।

अभी मैट्रिक भी नहीं हुवे थे कि, माँ की मृत्यु हो गयी । कोयले की ठेकेदारी करनेवाले पिताजी को असाध्य बीमारी थी । इसी-कारण आर्थिक अभावों के बीच पारिवारिक जिम्मेदारियाँ उन्हें ही निभानी पड़ी । परसाई के जीवन का वास्तविक संघर्ष यहीं से शुरू होता है । इसी संघर्ष ने उन्हें ताकद भी दी और दुनिया की शिक्षा

भी प्रदान की । कितनी ही कठिनाईयों के बावजूद परसाईं आगे पढ़ते रहे । उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदीमें एम्.ए. किया । उसके बाद `डिप्लोमा इन टीचिंग` पूर्ण किया ।

आप लगभग अठारह साल के थे कि, इटारसी के पास `ताक` मे जंगल विभाग में नौकरी करने लगे । उसके बाद छ: महीने `खंडवा` मे अध्यापन किया । १९४१-४३ ये दो वर्ष जबलपुर के स्पेन्स ट्रेनिंग कॉलेज में शिक्षण कार्यका अध्ययन किया । १९४३ से जबलपुर के ही मॉडेल हायस्कूल में अध्यापन किया । १९५२ में इस्तीफा दे दिया । १९५३ से ५७ तक प्राइवेट स्कूलों में पढ़ाया और फिर नौकरी को अंतिम रूपसे नमस्कार किया । तबसे लगातार स्वतंत्र रूपसे लेखन कर रहे हैं । १९५६ में जबलपुर से `वसुधा` नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन तथा संपादन किया । घाटे के बावजूद भी कई वर्षोंतक उसे चलाया, परंतु परिस्थितियों से मजबूर होकर १९५८ में उसे बंद कर दिया ।

अनेक पत्र-पत्रिकाओ में वर्षोंतक नियमित रूपसे स्तंभलेखन किया । `नयी दुनिया` में `सुनो भई साधो`, नयी कहानियाँ में `पाँचवा कालम` और `उलझी - उलझी`, `कल्पना` में और अंतमें आदि के रूपमें उन्होंने स्तंभलेखन किया । इसकी लोकप्रियता के बारेमे दो मत नहीं है । परसाई का `ये माजरा क्या है` यह राजनैतिक स्वभाव का जनरूचि का कालम है । यह केवल एक सूचना प्रधान व्याख्या नहीं है, पर एक चिंतनशील साहित्यकार का विश्लेषण है, जो एक सुनिश्चित जीवन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में समसामयिक राजनैतिक घटनाओं को परखने का प्रयास कर रहा है ।

परसाईंजी की महत्वपूर्ण साहित्य - सेवा के लिये जबलपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया ।

कितने ही अन्य पुरस्कारों के अतिरिक्त १९८२ में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया । १९६२ में विश्व शांति समेलन में भारतीय प्रतिनिधी मंडल के एक सदस्य के नाते उन्होंनें रूस की यात्रा भी की थी ।

परसाईजी का साहित्य काफी समृध्द है । उन्होनें स्तंभलेखन के साथ साथ कहानी, उपन्यास तथा निबंधों के रूपमें लेखन किया है ।

प्रकाशित पुस्तकें :

`हँसते हैं, रोते हैं,` जैसे उनके दिन फिरे ` ( कहानी संग्रह), `रानी नागफनी की कहानी,` `तट की खोज (उपन्यास), `तबकी बात और थी,` `भूतके पाँव पीछे,` `सदाचार का तावीज,` बेईमानी की परत,` `वैष्णवन की फिसलन,` `पगडंडियोंका जमाना,` `शिकायत मुझे भी है,` `अपनी अपनी बीमारी,` `ठिठुरता हुआ गणतंत्र,` `एक लडकी पाँच दीवानें` `तिरछी रेखाएँ,` `पाखंड का अध्यात्म,` `विकलांग श्रध्दाका दौर` (निबंध संग्रह) तथा `और अंतमे, `सुनो भाई साधो,` `माटी कहे कुम्हार से` आदि के रूपमें लेखन किया है ।

इसके बावजूद रचनाओं के फुटकर अनुवाद लगभग सभी भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में किये है । मल्यालय में सबसे अधिक चार पुस्तकें प्रकाशित हुवी है ।

`फरिश्ते की डायरी,` `पैगंबर की डायरी` जैसी डायरी सीरीज की पुस्तकें भी परसाईजी ने लिखी हैं ।

`पूछिये परसाईसे` यह प्रश्नोत्तर का कालम (देशबंधु) में प्रकाशित किया जाता था । `ये माजरा क्या है` यह कालम प्रगतिशील

विचारधारा के लेखककी दृष्टि है, जो भारतीय राजनीति के भीतर छिपी विसंगतियों को उजागर करती है।

परसाईजी का विस्तृत लेखन हमारे आसपास के वर्तमान जीवन का वास्तविक इतिहास है। सोचने के लिये मजबूर करनेवाली दृष्टि परसाई के व्यंग्यका मुख्य घटक है। साधारण पाठक कभी कभी इस दृष्टि को सही रूपमें देख नहीं सकता और केवल वर्णित वक्रता का आनंद लेकर रहता है। मगर परसाई के व्यंग्य की चोट दुष्ट और भ्रष्ट समाज-व्यवस्था को नकार कर उसकी जगह मानवीय समाज की स्थापना से संबंधित है। उनमें केवल नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं है, बल्कि निषेध का निषेध है। परसाई व्यंग्य के लिये विरोधी रंगों, पक्षों और प्रत्ययों को एक साथ प्रस्तुत करने की कला में माहिर थे। उनका व्यंग्य कथात्मक सहज रूपमें होते हुये भी पैना होता है। व्यंग्य के लिये परसाईजी ने जिस शैली को अपनाया है, उससे ऐसा लगता है कि, लेखक पाठक के सिरपर नहीं, बल्कि सामने बैठकर बातें कर रहा है। परसाई ने अपने व्यंग्य के माध्यम से विवेक और विज्ञान संमत दृष्टि को स्वीकारात्मक रूपमें प्रस्तुत किया है।

' परसाई का व्यंग्यलेखन मनोरंजनात्मक जनसंघर्ष है। वह जन-हित को केंद्रस्थ कर जनशत्रुओं, उच्चवर्गों, शासकों आदि परजीवी लोगों को ही नहीं, अपने जनपक्ष के साथियों के अंतर्विरोधों, को भी नहीं बख्शते और यही चीज़ परसाई को बड़ा व्यंग्यकार बनाती है।' (४)

परसाईका व्यंग्यमय लेखन समझाने में सरल, मगर अनुभव और विश्लेषण में जटिल और विविधायामी है। उसमें प्रखर सामाजिक चेतना का क्रीडाशील संचरण है, उद्देश्य जनमुक्तिबोधक है।

' व्यंग्य आधुनिक हिंदी साहित्य की उल्लेखनीय घटना है।

मानव-जीवन को रूढ़ि विहीन करने और समता, बंधुत्व और न्याय के आधारपर नये समाज की प्रतिष्ठा के लिये आतुर साहित्यकार ने जिन उपकरणों का आश्रय लिया, उनमें व्यंग्य प्रमुख है।" यह बात परसाईजी का व्यंग्य साहित्य देखने पर सौ-फीसदी सही लगती है।

...

प्रथम अध्याय

संदर्भ सूची

१) `बाँसन देसी` - संपादक कमलाप्रसाद ।
आत्मकथ्य मैं से - हरिशंकर परसाई - पृ.३०

२) `बाँसन देसी` - संपादक कमलाप्रसाद । पृ.३४

३) `हरिशंकर परसाई- व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।
- डा. मनोहर देवलिया । पृ.१२

४) `बाँसन देसी` - संपादक कमलाप्रसाद ।
`एक सुविन्यस्त संसार` - विश्वंभरनाथ उपाध्याय । पृ.१६३